म.प्र. के दो मंत्री आमने - सामने

देवास की डिप्टी कलेक्टर संजना जैन का तबादला और उन्हें तुरत - फुरत रिलीव किए जाने के आदेश के कारण मध्यप्रदेश में भाजपा सरकार के दो मंत्री आमने - सामने आ गए हैं। वही विपक्षी दल कांग्रेस को एक मुद्दा मिल गया। मध्यप्रदेश के सहकारिता मंत्री गौरीशंकर बिसेन ने साफ शब्दों में कहा है कि मैंने ही काला बाजारी रोकने के निर्देश दिये थे। मेरे निर्देश पर छापामारी की गई थी। फिर डिप्टी कलेक्टर को क्यों हटाया गया। उधर, मध्यप्रदेश के पर्यटन और खेल मंत्री तुकोजीराव पवार ने कल्पना नहीं की थी कि डिप्टी कलेक्टर का तबादला बवाल में बदल जाएगा। वह सफाई दे रहे हैं कि मैने डिप्टी कलेक्टर का तबादला नहीं करवाया हैं। पिछले विधानसभा चुनावों के साथ भी डिप्टी कलेक्टर संजना जैन पर तुकोजीराव पवार सरेआम भड़क चुके हैं। आरोप है कि पवार इस बार अपने एक समर्थक तथा भाजपा नेता दिनेश गुप्ता के यहां की गई छापामारी के चलते आपा खो बैठे। गत 29 मई को देवास बावरिया क्षेत्र स्थित गुप्ता के

मिष्ठान प्रतिष्ठान पर छापे के बाद जैसे ही प्रशासन का दल गया पवार वहां आ धमके। उन्होंने जिला प्रशासन के अधिकारियों से फोन पर काफी लंबी बात की। मजेदार बात यह है कि पवार को उस समय देवास में होना ही नहीं था। कहा जा रहा है कि एक आपराधिक मामले में पवार के वकीलों ने कथित रूप से अर्जी लगाकर अदालत में पेश होने से इस आधार पर छूट मांग रखी है कि उन्हें मुंबई में बेटे के आपरेशन के सिलसिले में जाना हैं।

पवार और सोनकच्छ विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी फूलचंद वर्मा पर आरोप है कि गत आठ नवम्बर को उन्होंने सोनकच्छ रिटर्निंग आफीसर के साथ काम कर रहीं संजना जैन के कर्तव्य निर्वहन में रूकावट डाली तथा दुर्व्यवहार किया पवार के दुर्व्यवहार की वीडियों रिकार्डिंग भी उपलब्ध हैं।

बताया जाता है कि दोपहर संजना जैन दल बल के साथ दिनेश गुप्ता के अमृत रेस्टॉरेंट पहुंची थी। गुप्ता ने उन्हें पहले कार्रवाई से रोका। प्रशासन दल ने शाम तक छह सैम्पल लिए और रसोई गैस के दो सिलेण्डर बरामद किए इसी दौरान गुप्ता ने तुकोजीराव को फोन कर दिया। पवार सफाई दे रहे है कि वह रेस्टॉरेंट में चाय पीने गए थे।

महिला आरक्षण पर विरोध के स्वर भी गूंजने लगे

पहले पेज से जारी...

कांग्रेस ने जहां महिलाओं को महत्व दिया है वहीं भाजपा ने भी लोकसभा में सुषमा स्वराज और राज्य सभा में मायासिंह को उपनेता बनाकर इस महत्व को स्वीकार किया है. इन सब के बीच महिला आरक्षण को लेकर देश में फिर एक बार बहस शुरू हो गई है. कांग्रेस और भाजपा दोनों जो देश की राजनीति के दो ध्रुव है वे महिला आरक्षण बिल को लेकर एक स्वर में उतावले हैं. वहीं मुलायम सिंह यादव की समाजवादी पार्टी, लालू प्रसाद यादव का राजद और शरद यादव का जनता दल यू इसके विरोध में खड़ा है.

मायावती की बसपा भी आरक्षण बिल के स्वरूप को स्वीकारने को तैयार नहीं है. उनका तर्क है कि महिला आरक्षण बिल के इस स्वरूप से दलित और पिछड़ी महिलाओं को हक पर कुठाराघात होगा किये जाने चाहिए. इस बिल में जिससे दलित और पिछड़ी महिलाओं के लिये सीटें रिजर्व हो ताकि सवर्ण महिलाएं उनका हक नहीं मार सके. उनकी बातों में दम जरूर है, उनकी इस बातों को कांग्रेस और भाजपा के पिछड़े सांसदों का भी समर्थन मिल रहा है. इससे लगता है कि आरक्षण बिल शायद ही इस बार भी पारित हो पाए.

महिला आरक्षण को लेकर पिछले दस साल से ऐसी ही गुत्थम गुत्था चल रही है. बहस शुरू होती है नतीजे पर पहुंचने के पहले ही ठंडे बस्ते में डाल दी जाती है. लेकिन इस बार राष्ट्रपति से लेकर लोकसभा अध्यक्ष पद तक काबिज महिलाएं शारद इसे अंजाम तक पहुंचाएंगी और यदि ऐसा हुआ तो देश की संसद में 248 और राज्य विधानसभा में 1223 महिलाएं पहुंचेगी. यानि 1471 निर्वाचन क्षेत्र ऐसे होंगे जहां से पुरूषों का दबदबा हमेशा के लिये खत्म हो जाएगा. फिलहाल 790 सांसदों में महिलाएं सिर्फ 80 है. 543 सदस्यों वाली लोकसभा में 38 और राज्य सभा में 221 कमोबेश यहीं हालत देश की विधानसभाओं की भी है. जहां 4072 विधायकों में से 300 से भी कम महिलाएं है.

संगमा नतमस्तक, पवार पर...

पहले पेज से जारी...

क्या मराठा सरदार की घरवापसी का प्रयास हो रहा है? इस पर एक वरिष्ठ नेता का जवाब आया कि 'अगाथा संगमा व पीए संगमा की मुलाकात सोनिया से होने के बाद आपको आश्चर्य क्यों हो रहा है?' कांग्रेस जानती है कि केवल कड़ा रुख अपनाकर राजनीति के धुरंधर शरद पवार को नहीं मनाया जा सकता। इसीलिए, जो कांग्रेस द्रमुक से एक-एक सीट के लिए लड़ रही थी, पवार को उसने नाराज होने का कोई मौका नहीं दिया। मात्र नौ सीटें पाने के बावजूद तीनों अहम मंत्रालय देकर न सिर्फ पिछली बार का उनका रुतबा कायम रखा गया, बल्कि पवार के विश्वस्त प्रफुल्ल पटेल को भी पसंदीदा नागरिक उड्डयन मंत्रालय दिया गया है। दूसरी तरफ कांग्रेस की महाराष्ट्र इकाई अगले विधानसभा चुनाव में अकेले चलने का राग छेड़ कर दबाव की रणनीति पर भी काम कर रही है। वैसे भी लोकसभा चुनाव से पहले विलास राव देशमुख अकेले लड़कर कांग्रेस को 20 सीटें दिलाने का दावा कर रहे थे। अब, जबकि 17 सीटें कांग्रेस ले आई और एनसीपी मात्र ९ पर रुक गई है तो प्रदेश इकाई के हौसले और बुलंद हैं। सूत्रों का कहना है कि पवार भी विधानसभा चुनाव को लेकर असमंजस में हैं। महाराष्ट्र के कई राजनीतिक परिवार भी मराठा सरदार के मारे हैं, कांग्रेस के रणनीतिकार उनका भी हौवा दिखाकर पवार पर वापसी के लिए दबाव बनाने की रणनीति में जुटे हैं।

सपा को 'भूल' का एहसास :- विदेशी मूल के मुद्दे पर पीए संगमा ने माफी मांगी तो सपा को भी 1999 का अपना रुख 'भूल' नजर आने लगा है। सपा महासचिव अमर सिंह ने भी कहा कि 'यह सोनिया गांधी की सफलता है और विदेशी मूल का मुद्दा उठाने वाले शरद पवार, पीए संगमा और तारिक अनवर की विफलता है।'

यह तो पुरुषार्थ भी नहीं और पुरुषत्व भी नहीं

चक्रम

सुरेन्द्र बंसल

महिला आरक्षण बिल को लेकर जद यू के शरद यादव का उखड़ जाना अपने को कुछ रास नहीं आ रहा है.लोकसभा में वे बे-कदर उखड़े और भरपूर ताकत से भरपूर कमजोर बयान दे डाला कि महिला आरक्षण बिल यदि जस का तस पास हुआ तो वे जहर खा लेंगे. अपन को सत्ता के चक्रम में यह बहुत चक्करदार लगा है. इस तरह का रोष कौन जताता है, किसी महिला ने यह कहा होता कि महिला आरक्षण बिल हुबहू पास नहीं हुआ तो वह जहर खा लेंगी तो इसलिए जंचता कि वे इस तरह के बयानों में माहिर और जल्दबाज होती है.

पुरुष स्वयं अपने आप में एक निहित शक्ति माना गया है. और इस बढ़ती हुई शक्ति से उसका दंभ बढ़ता गया लिहाजा महिलाएं कमजोर और आश्रित मानी जाने लगी.उसे गृह कार्य की जवाबदारी कार्यो के विभाजन के तहत दी गई और बलशाली पुरुष को घर की सम्पूर्ण व्यवस्था में अपने कर्म से सहभाग का जवाबदेह बनाया गया. इस जवाबदेही ने पुरुष को दंभी बना दिया. उसे लगने लगा कि वह परिवार का मुखिया इसलिए है कि वह कमा कर ला सकता है और उसकी कमाई पर सब आश्रित है. यहां से पुरुष का दंभ बढ़ता गया. नतीजा समाज की नियत व्यवस्था बिगड़ गई और पुरुष की नीयत बिगड़ गई. उसने महिलाओं को अपना औजार बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी और उसे अपने उपभोग की वस्तु समझ लिया. इससे स्थितियां बिगडी और घर का श्रृंगार की तरह रखी जाने वाली बहू जुल्म और शोषण का शिकार होते गई.

सामाजिक वर्ण व्यवस्था से उत्पन्न भेदभाव की तरह और कहीं उससे भी बढकर जुल्म और ज्यादतियां महिलाओं के साथ होती रही है. वर्ण व्यवस्था से समाज की स्थिति में जो भेदभाव आया वह इंसानी नस्ल में भेद करने की उपज थी. इंसान, इंसान से दूर होते गया और एक इंसान ने दूसरे इंसान को अछूत बना दिया. भेद की यह बदनीयत परिवारों में भी चली और महिलाओं से लेकर भ्रूण तक जिसमें कन्या तत्व था इसका शिकार बनी. इस आधुनिक देश में ऐसे जल्लादों की दुकानें बढ़ गई जो दूरबीन से देखकर भ्रूण में बैठी कन्याओं को मारने लगे. लाखों कन्याएं भ्रूण में ही इस देश में मारी गई है और इसमें वे महिलाएं भी शामिल हो गई जो पुरुष को बड़ा और देवत्व मानती रही.

पुरुषार्थ का अर्थ क्या पुरुष का दंभ ही है. अध्यात्म के सबसे बड़े ग्रंथ गीता में भगवान कृष्ण ने पुरुषार्थ को कर्मण्येवाधिकारस्ते कहकर जिस फल के प्राप्त होने की दिलासा दी है वही पुरुषार्थ है और उसमें पुरुष का सही अर्थ कर्म की ऐसी सार्थकता से जुड़ा है जो बलशाली पुरुष के लिए नियत की गई है.लेकिन यह पुरुषार्थ पुरुष का दंभ बन गया उसने पुरुष होने का मतलब जवाबदारी से नही ज्यादती,शोषण और जुल्म की पराकाष्ठा से जोड़कर बहशीपन तक अपना चरित्र दिखाया .उसके चेहरे में दिखावटीपन और और आंखों में भेड़िए की दृष्टि आ गई. आज पुरुष का सही अर्थ कितना बिगड़ गया है और पुरुषार्थ का पवित्र अध्यात्म ही खो गया है. और अब उसमें पुरुष तत्व भी किस कदर है?

पुरुषत्व में जो तत्व होना चाहिए वह अब कहीं दिखता नहीं . पुरुष वहीं है जो स्वयं के लिए नहीं समाज और परिवार के लिए जिम्मेदार हो उसमें वह शक्ति हो जो हर परिस्थितियों में अपने परिवार को ,समाज को और अपनी जमीन याने देश को उपर ले जा सके ,उसकी रक्षा कर सके और उसका भरणपोषण कर सके.यह तत्व पहले पुरुषों में हुआ करता था इसलिए यह पुरुषत्व भी और पुरुषार्थ भी. जब जिसमें जो कमजोरी होती है तो उसका गुण बदल जाता है. अगर पुरुष तत्व की कमी होगी तो पुरुष कहां बचेगा. इसलिए पुरुषों को पहले पुरुष होने का सही अर्थ समझना चाहिए और अपने तात्विक गुणों से अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहिए.

समय बदलाव लाता है. बदली और बिगड़ी हुई परिस्थितियों ने महिलाओं को सशक्त और आत्म निर्भर बनाया है. अब जरुरत उन्हें अवसर देने की है. बिगड़ी हुई परिस्थितियों ने महिलाओं को नई ताकत से उठ खड़े होने की प्रेरणा दी है उन्हें अवसरों से नवाजने का हमें मौका देना है. ऐसी बनती स्थिति में जहर खाने की बात करना अपने को कमजोर करना और अपना पुरुषत्व खोना है. यह न जो पुरुषत्व है औ न ही पुरुषार्थ!

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक उत्तम झंवर द्वारा मे. मोर्या आर्ट प्रा.लि. के लिये अपनी दुनिया प्रिन्टर्स १३, प्रेस काम्पलेक्स एबी रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं ३०५ मोर्या आर्केड १/२ ओल्ड पलासिया, इंदौर में प्रकाशित फोन : ४०४१२६८